आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2607 • उदयपुर, रविवार 13 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सूर्य चलने लगा अकेला

नरेश साहू के घर 6 साल पहले दूसरे बेटे ने जन्म लिया। परिवार को खुशी के साथ साथ दुःख भी हुआ। नवजात बालक का दांया पैर बांए पैर की अपेक्षा लगभग 7 इंच छोटा होने के साथ ही घुटने में किसी प्रकार का जोड़ नहीं था। यह स्थिति आगे जाकर इसके लिए बड़ी मुश्किल बनने वाली थी। दुर्ग (छत्तीसगढ़) जिले की पथरिया तहसील के भेड़ेसरा गांव में रहने वाले गरीब किसान नरेश साहू ने अपने इस बेटे को 2–3 साल की उम्र होने पर रामपुर के एम्स सहित अन्य शहरों के अस्पतालों में दिखाया लेकिन कोई स्थाई उपाय नहीं मिला।

सूर्यकांत नामक इस बच्चे को पड़ोस के ही एक स्कूल में दाखिल करवाया गया। बच्चा पांव छोटे–बड़े होने के कारण चल नहीं पाता था। उसे गोद में अथवा साइकिल पर स्कूल छोडना पड़ता था। किसी ने कैलिपर तो किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी लेकिन गरीबी के चलते यह व्यवस्था नहीं हो सकी। तभी परिवार के किसी मित्र ने उन्हें उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान ले जाने की यह कहते हुए सलाह दी कि वहां निःशुल्क कृत्रिम पांव, कैलिपर अथवा उपचार जो भी सम्भव होगा वह संतोषजनक ढंग से हो जाएगा।

पिता नरेश साहू बच्चे को लेकर 19 सितम्बर को संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उसके पांव की स्थिति को देखते हुए इसका विकल्प विशेष कैलिपर को ही मानते हुए बच्चे को कैलिपर विभाग के हेड डॉ. मानस रंजन साहू के पास भेजा। जिन्होंने सूर्यकांत के लिए अत्याधुनिक मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस सहित विशेष डिजाइन का कैलिपर तैयार कर लगाया। जो बाएं पैर के बराबर ही था। बच्चे की उम्र बढने के साथ उसके वजन को झेलने और उसे चलने में यह एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस बड़ी मदद करेगा। कुछ दिन सहारे के साथ चलने के बाद नरेश अब खुद चलता है। पिता ने बताया कि वह अकेला ही स्कूल जाता और लौटता है। संस्थान ने उनके परिवार की चिंता को तो दूर किया ही बालक को भी आत्मविश्वास से भर दिया।

रागिनी को मिलेगी रफ्तार

छोटेलाल साहू बिहार की गोपालगंज तहसील के डोरापुर गांव में रहते हैं। इनके घर बेटी के रूप में पहली संतान ने जन्म लिया। लक्ष्मी रूप मानकर पूरे परिवार ने खुशियां मनाई। लक्ष्मी के आने के बाद परिवार की माली हालत भी सुधरी।

साहू ने मजदूरी छोड़ खुद फल बेचने का धंधा शुरू कर दिया। बालिका का नाम रागिनी रखा गया। वह ज्यों–ज्यों बड़ी होती गई, उसका दांया पांव घुटने से नीचे मुड़ता गया। उसे खड़ी होने में भी परेशानी होने लगी। माता–पिता को चिंता होने लगी। वे घर में ही मालिश करते रहे और आसपास के डॉक्टरों को भी दिखाया लेकिन कोई माकूल उपचार न हो सका।

रागिनी को चार–पांच वर्ष की होने के बाद स्कूल में दाखिल करवाया गया। स्कूल ले जाना और लाना पिता अथवा माता की रोज की जिम्मेदारी थी। रागिनी पढने में होशियार है और वह इस समय नवीं क्लास की छात्रा है। इसी दौरान साहू के परिवार ने एक बेटे और एक बेटी ने और जन्म लिया। वे दोनों ही सामान्य हैं।

रागिनी पढ़–लिखकर बहुत आगे जाना चाहती है लेकिन जब वह अपने पांव की तरफ देखती तो निराश होकर रो पड़ती थी। सन् 2013 में सोशल मीडिया के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान में इस प्रकार की शारीरिक जटिलताओं के निःशुल्क ऑपरेशन और उपचार के बारे में पता लगने पर पिता रागिनी को लेकर उदयपुर आए। यहां डॉक्टरों ने जांच के बाद तत्काल ऑपरेशन की सलाह न देकर तीन वर्ष बाद की तारीख दी।

सन् 2016 में ये वापस आए तब कुछ दिन यहां रोककर गहनता से परीक्षण किया गया तो पाया गया कि ऑपरेशन के बाद इनके पांवों में एक उपकरण लगाया जाएगा किन्तु उसके लिए भी अभी इन्तजार करना होगा। इनके 2021 में आने पर 20 अगस्त को डॉ. अंकित चौहान ने रागिनी के पांव का सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर उसके पांव में इल्याजारो नामक उपकरण लगाया। पिता छोटेलाल साहू ने बताया कि चार माह के आराम के बाद रागिनी अब चलने का अभ्यास करने लगी है और उन्हें उम्मीद है कि वह पहले से अच्छी स्थिति में होगी और अपने सपनों को पूरा करेगी। वे संस्थान को निःशुल्क उपचार के लिए धन्यवाद देते हैं।

दो तरह के दंश

प्राचीन काल में भारत के किसी राज्य का एक राजा अत्यंत बुद्धिमान और कुशल शासक था। उसने अपने दरबार में उच्च कोटि के विद्वानों तथा धर्म मर्मज्ञों को स्थान दिया हुआ था। रोजाना वह राजकाज के साथ ही विभिन्न विषयों पर चर्चा तथा विचार–विमर्श किया करता था। एक दिन उसने दरबारियों से प्रश्न किया, 'इस संसार में सबसे तेज काटने वाला कौन है?' उत्तर में किसी ने बर्र, किसी ने मधुमक्खी, बिच्छू, सर्प आदि को तेज काटने वाला बताया।

किंतु राजा को इन उत्तरों में समाधान दिखाई नहीं दिया। तब उसने अपने वयोवृद्ध और अनुभवी महामंत्री की ओर देखा, जो मौन था। राजा ने उससे कहा, 'मंत्रीवर! आपने सबके उत्तर सुने किंतु आपने कुछ नहीं बताया।' मंत्री बोले, 'राजन! मेरे विचार में विषधर जीवजन्तुओं की अपेक्षा सर्वाधिक तेज काटने वाले मानव ही होते हैं और वे दो प्रकार के होते हैं, निंदक और चाटुकार।' मंत्री के इस उत्तर पर सभा में सन्नाटा छा गया।

राजा सहित सभी की दृष्टि अपनी ओर देखकर बात को स्पष्ट करते हुए मंत्री ने कहा, 'राजन! ईर्ष्या और द्वेष आदि के विष से भरा हुआ निंदक मनुष्य को पीछे से काटता है, जिसके प्रभाव से आत्मा तिलमिला उठती है और दूसरा चाटुकार व्यक्ति हितैषी बनकर अपनी वाणी में खुशामद का मीठा जहर भरकर सम्मुख ही व्यक्ति के मन में उतारता है। परिणामस्वरूप वह अहंकार से चूर–चूर होकर अपने दुर्गुणों को ही गुण मानकर पथभ्रष्ट हो जाता है।

वह सत्यासत्य का निर्णय किए बिना ही बुरे कर्म या विकर्म करता हुआ आत्मा के पतन की ओर बढ़ता चला जाता है। चाटुकार अथवा मायावी की बातों से मनुष्य की आत्मा अपनी सुधबुध खो बैठती है तथा अपने लाभ–हानि के अन्तर को भूलकर मनुष्य कुमार्ग के गर्त में गिर पड़ता है।' सभा में मंत्री के इस जवाब का तालियों से स्वागत हुआ और राजा भी उसके जवाब से संतुष्ट हुआ।

खुशी की तलाश

जीवन की खुशी इसमें नहीं है कि आप कितने खुश हैं, बल्कि इसमें है कि आपके कारण कितने लोग खुश हैं। एक धनाढ्य महिला प्रायः उदास रहती थी, लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है? वह खुशी की तलाश में किसी मनोविज्ञानी के पास गई। वह बोली, 'मुझे हर समय खालीपन का एहसास होता है जीने का मकसद समझ में नहीं आता।' मनोचिकित्सक ने पास ही कमरे की सफाई कर रही एक महिला को अपने पास बुलाया।

चिकित्सक ने अमीर महिला से कहा, 'अब यह देवी आपको बताएंगी कि उन्हें अपनी खुशी कैसे मिली? मैं चाहता हूं कि आप उन्हें सुनें।' देवी ने झाड़ू नीचे रखी और डॉक्टर के कहने पर पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। उसने कहा, 'मेरे पति की मृत्यु मलेरिया से हुई थी। तीन माह बाद मेरा इकलौता बेटा भी कार दुर्घटना में चल बसा। मेरे लिए अब कुछ नहीं बचा था। ना मैं सो पाती थी, ना भूख लगती थी, मुस्कुराहट तो कभी चेहरे पर आई ही नहीं। मरने के विचार आते थे। फिर एक दिन बिल्ली का एक छोटा–सा बच्चा मेरे साथ घर तक आया। उसकी हालत देखकर मुझे दुःख हुआ। बाहर ठंड थी, तो मैं उसे अंदर ले आई। उसे दूध दिया। दूध पीने के बाद वह मेरे पास बैठ गया और सूनी आंखों से मुझे ताकने लगा। मैंने दुलार से उसके पीठ पर हाथ फेरा। बच्चा अब मेरी गोद में आकर मेरे हाथ को चाटने लगा।

उसकी इस हरकत पर मुझे हंसी आ गई। यह लम्बे समय बाद चेहरे पर आई मुस्कान थी। मुझे लगा कि बिल्ली के बच्चे की मदद करके जब मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई है, अगर इसी तरह मैं और दुःखी लोगों के आंखों के भी आंसू पौंछ सकूं तो कितनी खुशी मिलेगी। अगले दिन मैंने घर में ही बिस्किट बनाएं और पड़ोसी बीमार के यहां जाकर उसका हाल– चाल पूछते हुए उसे दे दिए। वह बहुत प्रसन्न हुआ और मेरे प्रति कृतज्ञता जता रहा था। ऐसा करना मेरा रोज का क्रम बन गया।

अब मुझे लगता है कि मैं दुनिया की सबसे सुखी इंसान हूँ। चैन से खाती हूँ, ढ़ग से सोती हूँ और हर समय खुश रहती हूँ। मैंने यह जान लिया कि दूसरों को खुशी देने में ही खुशी मिलती है।

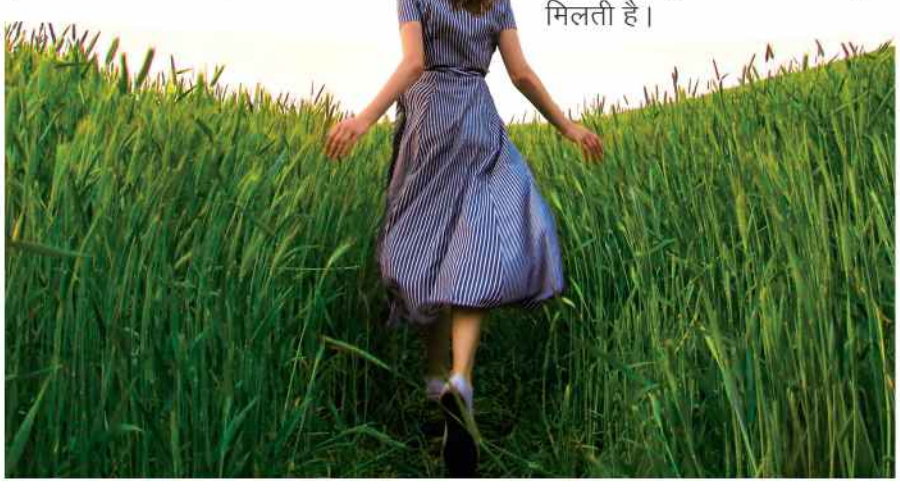

अहंकार की गति

एक मूर्तिकार उच्च कोटि की ऐसी मूर्तियां बनाता था, जो एकदम सजीव लगती थी। हर जगह उसकी कला की प्रशंसा होती और पुरस्कार मिलते। इससे मूर्तिकार को अंहकार हो गया कि उसके समान और कोई मूर्तियां नहीं बना सकता। एक दिन उसके घर एक महात्मा आए जिन्होंने उसे बताया कि और भी कोई श्रेष्ठ मूर्ति तुम बना सकते हो तो दो दिन में बना लो क्योंकि तीसरे दिन किसी भी क्षण तुम्हारी मृत्यु हो सकती है। मृत्यु की बात सुन वह परेशानी में पड़ गया। वह मरना नहीं चाहता था। उसने दो दिन में एक जैसी सुन्दरतम 10 पुरुष मूर्तियां बनाई,जो जीवंत लगती थी। तीसरे दिन वह स्वयं उन मूर्तियों के बीच बैठ गया। यमदूत जब उसे लेने आए तो एक जैसी आकृतियों को देखकर स्तम्भित रह गए। उन्हें ये तो पता था कि एक महात्मा ने मूर्तिकार को उसकी मृत्यु का संदेश पहले ही दे दिया है। उन्हें यह आभास हो गया कि इन्हीं मूर्तियों में कहीं न कहीं मृत्यु से बचने के लिए मूर्तिकार छिपा बैठा है लेकिन सभी 11 आकृतियां एक जैसी थी। उनमें मूर्तिकार कौनसा है? यह पता लगाना यमदूतों के लिए मुश्किल हो गया। वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाए? मूर्तिकार के प्राण अगर न ले सके तो सृष्टि का नियम टूट जाएगा और सत्य परखने के लिए मूर्तियां तोड़ी गई तो कला का अपमान होगा। अचानक एक यमदूत को मानव स्वभाव के सबसे बड़े दुर्गुण 'अहंकार' की स्मृति आ गई। उसने चतुराई से काम लेते हुए दूसरे यमदूत से कहा, 'मूर्तियां तो बड़ी सुन्दर बनी हैं, लेकिन इन्हें बनाने वाला यदि मुझे मिल जाता तो मैं उसे मूर्तियों की बनावट में रह गई भारी त्रुटि बताकर सुधार करवा देता।'

यह सुनते ही मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा कि मेरी कला में कमी रह ही नहीं सकती। मैंने पूरा जीवन इस कला को समर्पित किया है। प्रशंसा और पुरस्कार प्राप्त किए हैं। यह सोचने के साथ ही वह बोल उठा, 'कैसी त्रुटि?' यमदूत ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, 'बस यही त्रुटि कर गए तुम अपने अहंकार में।' क्या नहीं जानते कि बेजान मूर्तियां कभी बोला नहीं करती। यह प्रसंग बताता है कि व्यक्ति को अहंकार से सदा दूर रहना चाहिए।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

सम्पादकीय

जीवन कभी भी किसी राजमार्ग की तरह नहीं चलता है। यह तो टेढ़ा–मेढ़ा रास्ता है, बल्कि यह कहना चाहिये एक ऊबड़ – खाबड पगड़डियों का मार्ग है। इसमें अनेक पत्थर ठोकरों के रूप में भी मिलते है। लेकिन जो लोग सकरात्मक दृष्टि रखते हैं। वे ठोकरों से हार नहीं मानते, परेशान नहीं होते वे ठोकर वाले पत्थरों को भी सीढ़ी बना लेते है।

ठोकरों के भी अपने लाभ हैं। हर बार लगने वाली ठोकर से तत्काल दिखने वाले दो लाभ तो होते ही हैं। पहला यह कि ठोकर से यह पता चलता है कि मार्ग कितना कठिनाइयों से भरा पड़ा है। ये कठिनाइयाँ चुनौतियों के रूप में सामने आती हैं। चुनौतियों से निपटना मनुष्य की दक्षता का संवर्धन ही है। दूसरा लाभ यह होता है कि ठोकर लगने पर व्यक्ति लड़खड़ाता है, उसे सहारे की आवश्यकता प्रतीत होती है। तब यह पता चलता है कि कौन उसका हितैषी है जो सहारा देने के लिये प्रस्तुत होता है। अपनों की पहचान ठोकर से ही होती है। इसलिये ठोकरें भी बहुत कुछ सिखा जाती हैं।

कुछ काव्यमय

ठोकरें लगती रही तो
समझ का सैलाब आया।
अपनी क्षमता आंक पाये,
पत्थरों से पार पाया।।
लड़खड़ाते को संभाले,
हाथ वो पहचान पाये ।
ठोकरें तो मिल गई पर
कितने ही संदेश आये ।।

- वरदीचन्द राव

खिल उठे उदास चेहरे
हादसों में हाथ–पैर गंवाने के बाद रुकी थी ये जिंदगियाँ

दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को अक्टूबर में विभिन्न शहरों में निःशुल्क शिविर आयोजित कर कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा मैजरमेंट लिया गया। इन शिविरों में जांच कर ऑपरेशन योग्य दिव्यांगों का चयन भी किया गया।

गुरूग्राम– मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से गुरूग्राम (हरियाणा) के सेक्टर–14 स्थित सामुदायिक केन्द्र में 23 अक्टूबर को विशाल दिव्यांग जांच, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 86 दिव्यांगजन ने पंजीयन करवाया। जिनमें से टेक्नीशियन श्री उत्तम चंद ने हादसों में हाथ–पैर गंवाने वाले 13 लोगों के कृत्रिम अंग बनाने के लिए नाप लिया। 10 दिव्यांगों के लिए उनके हाथपांव की स्थिति के अनुसार कैलीपर बनाकर लगाए गए। 30 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर और 5 दिव्यांगों को बैसाखी की जोड़ी प्रदान की गई। 3 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के प्रबन्धक श्री सुकान्त कुमार थे।

अध्यक्षता कम्पनी के ही श्री विजय प्रताप ने की। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री विनोद गुप्ता, श्रीमती कृष्णा अग्रवाल, श्रीमती रूमा विरल व श्रीमती शंकुतला थी। गुरूग्राम आश्रम प्रभारी श्री भंवर सिंह राठौड़ व दिल्ली आश्रम प्रभारी श्री जतन सिंह भाटी ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लढ्ढ़ा ने संचालन किया।

सीकर –समदृष्टि, क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल के सौजन्य से संस्थान के तत्वावधान में श्री मदनलाल भीकमचंद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीकर (राजस्थान) में 24 अक्टूबर को आयोजित दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर में 106 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ।

जिनमें से 16 का चयन निःशुल्क सर्जरी के लिए किया गया जबकि 11 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग तथा 28 के कैलिपर बनाने के लिए टेक्नीशियन श्री उत्तम चंद द्वारा नाप लिया गया। शिविर के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री सुबोधानंद महाराज थे। अध्यक्षता समदृष्टि, क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रतन लाल शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि पूर्व सरपंच श्रीमती प्रतिभा देवी, एडीजे श्रीमती सीमा सारंग, समाजसेवी श्री महेन्द्र मिश्रा, श्री राधाकृष्ण व विद्यालय प्राचार्य श्री राकेश पारीक थे। शिविर प्रभारी श्री मुकेश शर्मा व श्री भरत भट्ट ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया।

बीदर– संस्थान के तत्वावधान एवं केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री श्री भगवत जी खुंबा के सहयोग से बीदर (कर्नाटक) में 11 नवम्बर को सम्पन्न मेगा दिव्यांग जांच, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर में 225 दिव्यांगजन पंजीकृत हुए। जिनमें से 25 के लिए कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 12 के लिए कैलिपर बनाने का नाप टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह ने लिया। डॉ. अजमुद्दीन ने 8 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि एवं शिविर सहयोगकर्ता श्री खुंबा एवं विशिष्ट अतिथियों ने 15 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 5 को व्हीलचेयर तथा 25 दिव्यांगों को बैसाखी की जोडियां वितरित की। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी सर्वश्री राजकुमार अग्रवाल, बृजकिशोर, आर.जी. अग्रवाल, सत्यभूषण जैन व समन्वयक श्री नागराज कपूर थे। श्री पन्नालाल हिरालाल कॉलेज में सम्पन्न शिविर का संचालन श्री हरिप्रसाद लढ्ढ़ा ने एवं व्यवस्था में श्री प्रकाश डामोर व श्री महेन्द्र सिंह रावत ने सहयोग किया।

मालपुरा– संस्थान के तत्वावधान में 10 अक्टूबर को श्री बारादरी रामचरित मानस मंडल के सौजन्य से मालपुरा (टोंक–राजस्थान) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि अग्रवाल समाज, चौरासी, महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती इंदु मित्तल थी। अध्यक्षता भाजपा

मालपुरा मंडल के अध्यक्ष श्री त्रिलोक जैन ने की।

शाखा संयोजक श्री सुरेन्द्र मोहन जैन ने बताया कि टेक्नीशियन श्री प्रकाश मेघवाल व श्री नाथू सिंह ने शिविर में 17 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग तथा 16 को कैलिपर लगाए। विशिष्ट अतिथि महिला अग्रवाल समाज की ब्लॉक अध्यक्ष श्रीमती गुंजन मित्तल व समाजसेवी श्री विकास जैन थे। संचालन हरिप्रसाद लढ्ढा ने किया।

मुम्बई – सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई के सहयोग से मुम्बई के बोरीवली–वेस्ट स्थित राजस्थान भवन में संस्थान की स्थानीय शाखा के तत्वावधान में 19 अक्टूबर को कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें करीब 100 से अधिक दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री प्रकाश मेघवाल ने 33 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग जबकि 49 को कैलिपर लगाए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर पूर्वी– बोरीवली के सांसद श्री गोपाल शेट्टी थे। अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री सुनील राणे ने की। विशिष्ट अतिथि नगर सेवक श्री प्रवीण शाह, ब्राइट ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. योगेश लखानी, सहयोग सेवा ग्रुप के श्री यतीन जी मागिया व श्री संजय सेमलानी थे। संस्थान शाखा के संयोजक श्री कमलचंद्र लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लढ्ढा व मुम्बई आश्रम के श्री महेन्द्र जाटव थे।

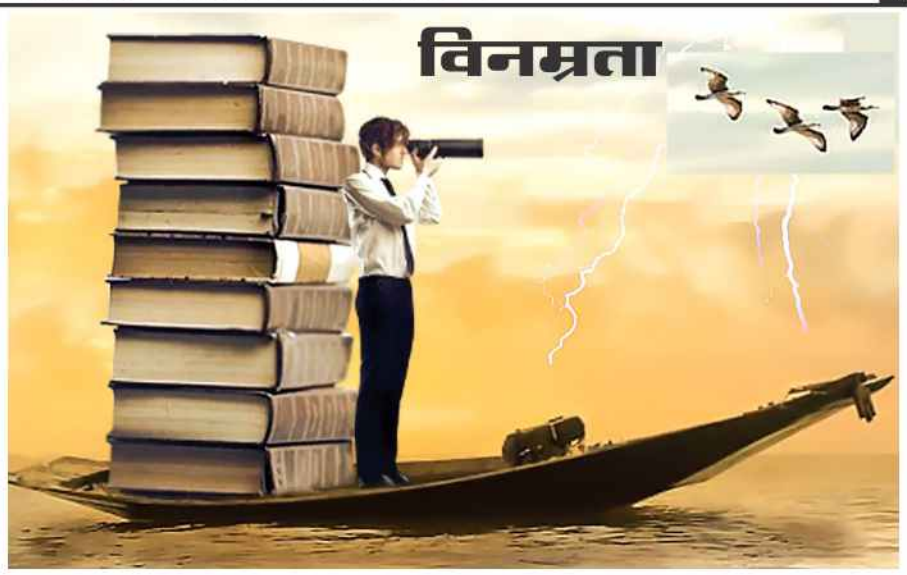

जीवन में वही व्यक्ति सफल हो सकते हैं जो अंहकार को त्यागकर विनम्रतापूर्ण जीवनयापन करते हैं। आंधियों में जो वृक्ष तनकर खड़े ही रहते हैं, वे प्रायः उखड़ जाते हैं, जबकि झुक जाने वाले पौधे सही–सलामत रहते हैं। आंधी बिना उन्हें नुकसान पहुंचाए गुजर जाती है।

स्वामी श्रद्धानंद जी के एक शिष्य थे, नाम था सदानंद। उन्हें एक बार इस बात का अंहकार हो गया कि वे स्वामी श्रद्धानंद जैसे मनीषी महात्मा के शिष्य हैं। वे हर किसी को नीचा दिखाने की कोशिश करने लगे। यहां तक कि वे अपनी सहपाठियों के साथ भी दुराव और दुर्व्यवहार करने लगे। यह बात स्वामी जी तक भी पहुंची। एक दिन गुरुजी भी जान बूझकर उनके सामने होकर निकले, लेकिन सदानंद ने उन्हें भी अनदेखा कर दिया। श्रद्धानंद समझ गए कि वास्तव में सदानंद अहंकार–वृत्ति का शिकार हो गया है। इसके भ्रम और अहंकार को तोडना इसके भावी जीवन के लिए आवश्यक है। उन्होंने सदानंद को अगले दिन सुबह अपने साथ भ्रमण पर चलने को कहा। वे सदानंद को एक झरने के पास ले गए और पूछा, 'जरा बताओ तुम सामने क्या देख रहे हो?'

सदानंद ने कहा, 'गुरुजी पानी ऊपर से नीचे की ओर बह रहा है और गिरकर फिर दोगुने वेग से ऊँचा उठ रहा है।' स्वामी जी ने कहा, 'मैं तुम्हें यहां एक विशेष उद्देश्य से लाया हूँ। अगर तुम जीवन में ऊँचा उठकर आसमान छूना चाहते तो इस पानी की तरह हमेशा झुकना सीखना होगा। अहंकार खतरनाक होता है, इससे व्यक्ति ऊपर उठने की बजाय नीचे ही गिरता चला जाता है।

आशा की निराशा पर जीत

जिन्दगी वास्तव में संघर्ष का ही दूसरा नाम है। जो संघर्षों से हार गया, समझो वह जिन्दगी ही हार गया। जिसने कठिनाइयों पर नियन्त्रण कर लिया, उसके लिए सफलता की राहें स्वतः खुलने लगती हैं। उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल उपखंड ऋषभदेव के गांव गरनाला की आशा देवी का जीवन भी संघर्ष का पर्याय ही रहा। लेकिन उसने हार नहीं मानी और हालात से लड़ते हुए आगे बढ़ती रही। आशा देवी करीब तीन वर्ष की थी तभी जलते चूल्हे के पास खेलते हुए उसमें गिर पड़ी और बुरी तरह झुलस गई। चेहरे सहित पूरा शरीर इस कदर झुलसा था कि बचने की उम्मीद नहीं थी। गरीब मां–बाप ने जैसे–तैसे कर्ज लेकर इलाज करवाया, जो दो तीन साल तक चला। आशा को लगा कि अब वह मां–बाप पर बोझ ही रहेगी लेकिन कब तक उम्र बढने के साथ–साथ उसने अपना हौसला भी बढ़ाया और जिद करके पढ़ाई शुरू की। जो हिम्मत करते हैं, ईश्वर भी उनका साथ देते हैं। ऐसा ही आशा के साथ हुआ। वह क्लास दर क्लास आगे बढ़ती गई और कॉलेज तक पहुंच गई। इसी दौरान ७०१८ में नारायण सेवा संस्थान द्वारा आयोजित निःशुल्क निर्धन एवंदिव्यांग सामूहिक विवाह में उसने दिनेश मीणा नामक युवक के साथ फेरे लिये।

गृहस्थी अच्छे से चल रही थी। दम्पती को एक बेटा भी नसीब हुआ। समय ने फिर करवट ली। सन् 2021 में आशा का पति कोरोना का शिकार हो गया। इलाज के बावजूद मई में उसकी मृत्यु हो गई। आशा पर फिर निराशा ने डेरा डाल दिया। वह बेसहारा हो गई। बच्चे के पालन–पोषण की जिम्मेदारी से वह दुःखी रहने लगी। उसकी इस हालत के बारे में संस्थान को पता चलने पर उसे हर माह राशन भिजवाया गया। संस्थान ने आशा को उसके पांवों पर खड़ा करने के लिए अक्टूबर के तीसरे सह्श्वताह मे उसके गांव में 'नारायण किराणा स्टोर'दुकान लगाकर दी। जिसमें किराणे का हर तरह का सामान भरा गया। आशा अब दुकान चलाती है। पढ़ी–लिखी होने के कारण आमद–खर्च का हिसाब रखती है। व्यवहार कुशल होने से लोग उसके यहीं से सामान लेते हैं। अब वह खुश है। संघर्ष से लड़ाई में वह जीत गई।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9829790403 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023